आखिर क्यों बढ़ रहा है माइथॉलजी का क्रेज

माइथॉलजिकल बुक्स आजकल काफी पॉपुलर हो रही हैं। टीवीवाले इन पर सीरियल बना रहे हैं, तो बॉलिवुडवाले फिल्में। हमने इन राइटर्स से जाना कि क्या वजह है कि माइथॉलजिकल बुक्स को लेकर लोग इतना क्रेजी नजर आ रहे हैं:

Prashant.Jain@timesgroup.com

बहुत दिनों की बात नहीं है, जब स्कूल-कॉलेज से अलग पढ़ाई के नाम पर यंगस्टर्स के हाथों में सिर्फ चेतन भगत के रोमांटिक फिक्शन हुआ करते थे, जिनमें वह लवस्टोरी, सेक्स और रोमांस का जबर्दस्त तड़का लगाते हैं। लेकिन पिछले कुछ अरसे से यूथ के बीच नया जॉनर पॉपुलर हुआ है। आजकल यंगस्टर्स माइथॉलजिकल फिक्शंस को लेकर क्रेजी नजर आ रहे हैं। मसलन अमीश त्रिपाठी, देवदत्त पटनायक, अश्विन सांघी, रवि सुब्रहमण्यम, आनंद नीलकंठन और क्रिस्टोफर सी. डॉयल जैसे राइटर्स उनके बीच काफी पॉपुलर हो रहे हैं। ये राइटर्स ना सिर्फ यंगस्टर्स को राम, श्रीकृष्ण, शिव, अशोक और चाणक्य की कहानियों से रोचक अंदाज में रूबरू करा रहे हैं, बल्कि इनकी कहानी को रहस्य-रोमांच से भरे फिक्शन के माध्यम से एकदम अलग अंदाज में पाठकों के सामने पेश कर रहे हैं। खास बात यह है कि इंग्लिश में लिखने वाले इन सभी लेखकों की किताबों के हिंदी ट्रांसलेशन भी काफी पॉपुलर हो रहे हैं। चाहे ऑनलाइन वेबसाइटें हों या फिर बुक स्टोर्स, इन राइटर्स की किताबें बिक्री के नए रिकॉर्ड्स बना रही हैं।

दादी-नानी नहीं हम सुना रहे कहानी

जाने-माने राइटर क्रिस्टोफर सी डॉयल अतीत को वर्तमान से खूबसूरत अंदाज में जोड़ने वाली किताबों को लेकर अपने फैंस के बीच बेहद पॉपुलर हैं। महाभारत के राज, सिकंदर का रहस्य और ड्रुइड का रहस्य जैसी बेस्टसेलर किताबें लिख चुके क्रिस्टोफर का कहना है कि वह अपनी किताबें लिखने से पहले काफी रिसर्च करते हैं। वह फिक्शन जरूर लिखते हैं, लेकिन किताब के आखिर में अपनी रिसर्च का लेखा-जोखा भी पाठकों के साथ शेयर करते हैं। क्रिस्टोफर की किताबों पर जल्द ही बॉलिवुड फिल्म बनाने की प्लानिंग चल रही है। यंगस्टर्स के माइथॉलजिकल फिक्शंस की ओर अट्रेक्ट होने की वजह पूछने पर क्रिस्टोफर कहते हैं, 'वे अतीत के बारे में ज्यादा जानने की चाहत में माइथॉलजिकल फिक्शंस को पढ़ रहे हैं। मैं कईं पुराणों पर बेस्ड एक नई फिक्शन बुक लिख रहा हूं, जिससे लोगों को उनके बारे में जानकारी मिलेगी।'

वे अतीत के बारे में जानना चाहते हैं

पहले घर में बच्चे दादी-नानी से पुराणों की कहानियां सुनते हुए बड़े होते थे। हम लोग भी ऐसे ही बड़े हुए हैं। लेकिन आज की पीढ़ी में सिंगल फैमिलीज की वजह से बच्चे अपनी पौराणिक कहानियों से अंजान हैं। यही वजह है कि वे अपने अतीत के बारे में ज्यादा जानने की चाहत में माइथॉलजिकल फिक्शंस को पढ़ रहे हैं। जल्द ही मैं पुराणों पर बेस्ड फिक्शन बुक भी लिख रहा हूं।

आर्टिफिशल लाइफ में विश्वास की तलाश

आजकल की वॉटसऐप और फेसबुक में जीने वाली जेनरेशन के लिए माइथॉलजी की ओर लौटना स्वभाविक ही है। दरअसल, सोशल मीडिया की दुनिया में चीजें काफी आर्टिफिशल होती हैं, जबकि धर्म-पुराण से जुड़ी चीजें यंगस्टर्स के बीच विश्वास जगाती हैं। इसलिए मुझे लगता है कि आजकल की युवा पीढ़ी माइथॉलजिकल किताबों को लेकर इतना क्रेजी नजर आ रही है।

हम उनके सवालों का देते हैं जवाब

हम बचपन से ही रामायण-महाभारत या दूसरे पुराणों और राम-कृष्ण व शिव जैसे भगवानों के बारे में पढ़ते और सुनते हैं। लेकिन अगर आप कभी सोचेंगे कि वे भगवान कैसे बने? तो आस्था आड़े आ जाती है। मैंने अपनी किताबों में युवाओं को यही समझाने की कोशिश की है कि भगवान आखिर भगवान कैसे बने। यही वजह है कि यंगस्टर्स माइथॉलजिकल फिक्शन की ओर अट्रेक्ट हो रहे हैं।

CONTINUED ON PAGE 3

...CONTINUED FROM PAGE 1

अश्विन सांघी

रवि सुब्रहमण्यम

आनंद नीलकंठन

उन्हें सवालों का जवाब चाहिए

शिवा ट्रॉयलजी और रामचंद्र सीरीज की सुपरहिट पांच किताबें लिख चुके अमीश त्रिपाठी की पहली किताब इम्मोर्टल ऑफ मेल्हुआ पर पहले करण जौहर शुद्धि नाम की फिल्म बनाने वाले थे। लेकिन अब संजय लीला भंसाली, रितिक रोशन को शिव के रोल में साइन करके अमीश की किताब पर फिल्म बनाने की प्लानिंग कर रहे हैं। युवाओं में शिव और राम से जुड़ी किताबों में दिलचस्पी के बारे में पूछने पर अमीश बताते हैं, 'हम बचपन से ही राम-कृष्ण व शिव जैसे भगवानों के बारे में पढ़ते और सुनते हैं। लेकिन अगर आप कभी सोचेंगे कि वे भगवान कैसे बने? मैंने अपनी किताबों में युवाओं को यही समझाने की कोशिश की है कि भगवान आखिर भगवान कैसे बने।' बेस्टसेलर शिवगामी कथा, असुर और दुर्योधन की महाभारत लिखने वाले आनंद नीलकंठन लीक से हटकर किताबों के लिए पसंद किए जाते हैं। आनंद ने बताया, 'हम बचपन से चौपालों पर बहसों में हिस्सा लिया करते थे। वहीं से मुझमें सवाल उठाने की आदत डिवेलप हुई। इन्हीं सवालों के जवाब तलाशते हुए मैंने ये किताबें लिखीं। लोग भी ऐसे ही सवालों के जवाब की तलाश में इन माइथॉलजिकल बुक्स की ओर अट्रेक्ट हो रहे हैं।'

यूथ में धर्म से विश्वास जमता है

आजकल की यंग जेनरेशन को धर्म से जुड़ी तमाम चीजें आसानी से समझ नहीं आतीं। बेस्टसेलर राइटर देवदत्त पटनायक धर्म से जुड़ी चीजों को आसान भाषा में समझाने के लिए मशहूर हैं। उन्होंने महाभारत से लेकर गीता तक की तमाम भारतीय पौराणिक कथाओं को आसान भाषा में पाठकों तक पहुंचाया है। यही नहीं, देवदत्त कई पौराणिक टीवी सीरियल्स से भी जुड़े रहे हैं, जिसके माध्यम से वह नई पीढ़ी को पौराणिक चीजों की जानकारी देते हैं। यंगस्टर्स के बीच पौराणिक कथाओं के बढ़ते क्रेज के बारे में पूछने पर देवदत्त कहते हैं, 'आजकल की वॉटसऐप और फेसबुक में जीने वाली जेनरेशन के लिए माइथॉलजी की ओर लौटना स्वभाविक ही है। दरअसल, सोशल मीडिया की दुनिया में चीजें काफी आर्टिफिशल होती हैं, जबकि धर्म-पुराण से जुड़ी चीजें यंगस्टर्स के बीच विश्वास जगाती हैं। इसलिए मुझे लगता है कि आजकल की युवा पीढ़ी माइथॉलजिकल किताबों को लेकर इतना क्रेजी नजर आ रही है। हालांकि इसमें भी उन्हें सावधान रहना होगा।' भगवान कृष्ण, ईसा मसीह और सम्राट अशोक के जमाने के रहस्यों को आज के जमाने से जोड़कर रोमांचक नॉवल लिखने वाले राइटर अश्विन सांघी की किताबें

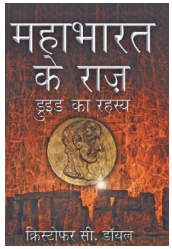

कृष्ण कुंजी, चाणक्य मंत्र, सियालकोट गाथा और रोजाबेल वंशावली बेस्टसेलर रह चुकी हैं। इसके अलावा, उनकी किताबों के राइट्स फिल्म बनाने के लिए भी खरीदे जा चुके हैं। यंगस्टर्स की माइथॉलजी में बढ़ती दिलचस्पी के बारे में अश्विन कहते हैं, 'दरअसल, नई पीढ़ी ने तमाम पौराणिक पात्रों के नाम तो खूब सुने हैं और उनके बारे में उन्हें आधी-अधूरी जानकारी भी है, लेकिन जब वे उन्हें अपने तर्कों की कसौटी पर कसते हैं, तो कुछ चीजें मिस हो जाती हैं। ऐसे में, अगर कोई मेरे जैसा राइटर उन चीजों पर कोई किताब लिखता है, तो वह उन युवाओं को अपनी ओर खींचती है।' थ्रिलर नॉवल्स के लिए मशहूर राइटर रवि सुब्रहमण्यम बैंकिंग से जुड़े फिक्शन लिखते हैं। लेकिन उनका हालिया थ्रिलर फिक्शन इन द नेम ऑफ गॉड, केरल के अकूत संपत्ति के लिए मशहूर पद्मनाभ स्वामी मंदिर से जुड़ी कहानी पर बेस्ड है। रवि ने बताया, 'मैं चीजों पर नजर रखता हूं और फिर कुछ घटनाओं को मिलाकर उन्हें नॉवल में तब्दील कर देता हूं। पिछले दिनों पद्मनाभ स्वामी मंदिर से जुड़ी घटनाओं ने मुझे प्रभावित किया। इसका माइथॉलजी से जुड़ा होना एक इत्तफाक कहा जा सकता है। मुझे खुशी है कि यंगस्टर्स काफी किताबें पढ़ रहे हैं।'

प्रशांत जैन

PILES / FISSURE
बवासीर बिना दर्द
इन्फ्रारेड किरणों द्वारा ईलाज
बवासीर की बीमारी में अधिकतर मरीज ऑपरेशन के डर के मारे झोला छाप डाक्टरों के पास ईलाज के लिये जाते रहते है जहां पर इन्फेक्शन आदि का खतरा रहता है व कई कई दिनों तक दर्द के मारे तड़पते रहते है । आज साईंस ने इतनी तरक्की कर ली है कि बवासीर का बगैर ऑपरेशन इन्फ्रारेड किरणों द्वारा बिना दर्द ईलाज किया जा सकता है । इस ईलाज में कोई चीरा फाड़ी, पट्टी व दर्द नहीं होता । मरीज तुरन्त छुट्टी जा सकता है । इस ईलाज में जर्मन मशीन द्वारा इन्फ्रारेड किरणें मस्सों की जड़ में दी जाती है जिससे मस्सों का खून का बहाव बंद हो जाता है व बवासीर के मस्से ठीक हो जाते है । किडार का भी बगैर ऑपरेशन ईलाज संभव है ।
Goyal Piles Centre (Since 1989)
D-12/182, 1st Floor, Sec-8, Rohini, Delhi (Nr. Rohini East Metro Station)
Time : 9.30 am - 1.00 pm (Evening by appointment)
Call : 9999302222 www.goyalpilescarecentre.com

GREENWAYS
Open 7 Days
South Ex II
FLAT